Rajkumar Shukla

In India's struggle for Independence, the "Champaran Satyagraha" marks a turning point. Rajkumar Shukla drew the attention of Mahatma Gandhi, who had just returned from South Africa, to the plight of the peasants suffering under an oppressive system established by European indigo planters. Beside other excesses they were forced to cultivate indigo on 3/20 part of their holdings and sell it to the planters at prices fixed by the planters themselves. This set the stage for Gandhiji's entry into the India's Struggle for Freedom. On his arrival at Motihari, the district headquarters, accompanied by Rajkumar Shukla, Gandhiji was ordered to leave by the next available train which he refused and was promptly arrested. He was released and the ban order was withdrawn in the face of a "Satyagraha" threat. Gandhiji conducted an open enquiry into the peasant's grievances. The Government had to appoint an enquiry committee with Gandhiji as a member. This led to the abolition of the system.

Rajkumar Shukla has been described by Gandhiji in his "Atmakatha", as a man whose suffering gave him the strength to rise against the odds. In his letter to Gandhiji he wrote-

"Respected Mahatma, you hear the stories of others everyday. Today please listen to my story .... I want to draw your attention to the promise made by you in the Lucknow Congress that you would come to Champaran. The time has come for you to fulfil your promise. 19 lakhs suffering people of Champaran are waiting to see you."

Gandhiji reached Patna on 10 April, 1917 and on 16 April he reached Motihari accompanied by Rajkumar Shukla. Under Gandhiji's leadership the historic "Champaran Satyagraha" began. The contribution of Rajkumar Shukla is reflected in the writings of Dr. Rajendra Prasad, first President of India, Acharya Kriplani and of course Mahatma Gandhi himself. Rajkumar Shukla maintained a diary in which he was given an account of struggle against the atrocities of the indigo planters, atrocities so movingly depicted by Deen Bandhu Mitra in "Neel Darpan", a play that was translated by Michael Madhusudan Dutt.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Rajkumar Shukla.

Credits:

Text :

Based on book "Rajkumar Shukla" by Rai Prabhakar Prasad & NCERT's publication: India's struggle for Independence.

Stamp/FDC/Brochure :

Designed by Sh. Sankha Samanta based on the materials received from Mani Bhushan Rai (Rajkumar Shukla's grandson) and Swati Chandra.

Cancellation Cachet :

Smt. Alka Sharma

भारतीय डाक विभाग
Department of Posts
India
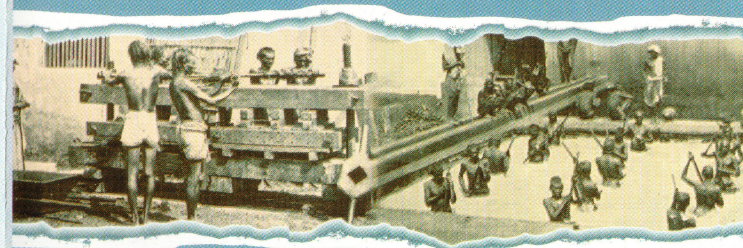
राजकुमार शुक्ल
RAJKUMAR SHUKLA
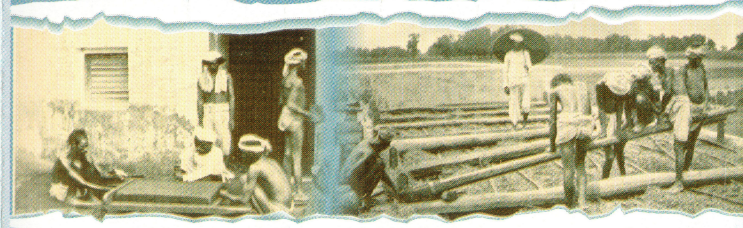
विवरणिका

BROCHURE

राजकुमार शुक्ल

भारत के स्वाधीनता संग्राम में "चम्पारण सत्याग्रह" का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। राजकुमार शुक्ल ने यूरोपीय नील उत्पादकों द्वारा स्थापित दमनात्मक व्यवस्था के अधीन पिस रहे किसानों की मार्मिक हालत की ओर दक्षिण अफ्रीका से हाल में लौटे महात्मा गांधी का ध्यान आकर्षित किया था। किसानों पर किए जा रहे अन्य अत्याचारों के अलावा उनसे उनकी भूमि के 3/20 हिस्से पर जबरन नील की खेती करवाई जाती थी तथा उन्हें उसे नील उत्पादकों को उन्हीं के द्वारा निर्धारित की गई कीमत पर बेचना पड़ता था। इस घटना से गांधी जी राजकुमार शुक्ल के साथ मोतीहारी, जिला मुख्यालय आए तो उन्हें यह आदेश दिया गया कि वे अगली गाड़ी से मोतीहारी छोड़कर चले जाएं। लेकिन, उन्होनें ऐसा करने से इनकार कर दिया और फलस्वरूप उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। "सत्याग्रह" की धमकी देने पर उन्हें छोड़ दिया गया तथा उन पर प्रतिबंध का आदेश वापस ले लिया गया। गांधीजी ने किसानों की दुःख – तकलीफों की तहकीकात करने के लिए खुली जांच की। सरकार को, गांधी जी को एक सदस्य के रूप में शामिल करते हुए एक जांच समिति नियुक्त करनी पड़ी। इससे इस दमनकारी प्रथा का अंत हुआ।

गांधीजी ने अपनी आत्मकथा में राजकुमार शुक्ल के बारे में लिखा कि वह ऐसे व्यक्ति थे जिनकी दुःख–तकलीफों ने कठिनाइयों का सामना करने के लिए उन्हें शक्ति दी। गांधी जी को लिखे पत्र में उन्होंने कहा था–

"आदरणीय महात्मा, आप हर रोज दूसरों की व्यथा सुनते हैं। कृपया आज मेरी व्यथा सुनें .... मैं आपका ध्यान लखनऊ सम्मेलन में दिए गए आपके आश्वासन की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ, जिसमें आपने कहा था कि आप चम्पारण आएंगे। अब समय आ गया है कि आप अपना वायदा पूरा करें। दुःख और तकलीफें झेल रहे चम्पारण के 19 लाख लोग आपसे मिलने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

गांधीजी 10 अप्रैल, 1917 को पटना तथा राजकुमार शुक्ल के साथ 16 अप्रैल को मोतीहारी पहुंचे। गांधीजी के नेतृत्व में ऐतिहासिक "चम्पारण सत्याग्रह" शुरू हुआ। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, आचार्य कृपलानी और स्वयं महात्मा गांधी ने अपने लेखों में राजकुमार शुक्ल के योगदान की चर्चा की है। राजकुमार शुक्ल डायरी लिखा करते थे, जिसमें उन्होंने नील उत्पादकों के अत्याचारों के खिलाफ संघर्ष का वर्णन किया है। इन अत्याचारों का दीनबंधु मित्र ने अपने नाटक "नील दर्पण" में मर्मस्पर्शी चित्रण किया है। इस नाटक का माइकल मधुसूदन दत्त ने अनुवाद किया था।

डाक विभाग राजकुमार शुक्ल पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :–

मूलपाठ :

राय प्रभाकर प्रसाद की पुस्तक "राजकुमार शुक्ल" तथा 'एन.सी.ई.आर.टी. प्रकाशन : भारत का स्वाधीनता संग्राम' पर आधारित।

डाक टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका :

मणि भूषण राय (राजकुमार शुक्ल के पौत्र) एवं स्वाति चन्द्र द्वारा प्राप्त सामग्री पर श्री शंख सामंत द्वारा डिजाइन किया गया।

विरूपण :

श्रीमती अलका शर्मा

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक–टिकटें	:	5.0 लाख
Stamps Printed	:	5.0 lakh
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य: ₹ 5.00